SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

डॉ. श्रीमती वर्षा पालीवाल, सहायक प्राध्यापक, आई.ई.एस विश्वविद्यालय, भोपाल
श्रीमती आकांक्षा राठौर, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आई.ई.एस.विश्वविद्यालय, भोपाल

सारांष

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में शोधार्थी ने " उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" सर्वेक्षण विधि से किया। भोपाल जिले के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जानने के लिए स्वनिर्मित षैक्षिक उपलब्धि प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–टेस्ट के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों एवं छात्राओं में षैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

प्रस्तावना

षिक्षा, केवल सूचना प्रदान करने एवं कौषल प्रषिक्षण का माध्यम नहीं है बल्कि यह बालकों को मूल्यों व संस्कारों का ज्ञान भी प्रदान करती है। षिक्षा एक विकासात्मक प्रक्रिया है। शिक्षा द्वारा ही ज्ञान व अनुभव को विस्तार मिलता है। शिक्षा द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन सहज रूप में लाया जाता है। समाज में पिछड़े तथा शिक्षा से वंचित बच्चों को समाज की मुख्य धारा में लाकर शिक्षा प्रदान करना एक अद्भुत सामाजिक तथा राजनैतिक कदम है। भारत सरकार ने बच्चों को मूलभूत शिक्षा का अधिकार देकर सभी वर्ग के लिए शिक्षा समान कर दी है।

विवेकानन्द के अनुसार (1863–1902) सब व्यक्तियों तथा जन साधारण की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। शिक्षा की अवहेलना हमारे पतन का कारण है अतः इसके उत्थान में ही हमारे देश का कल्याण निहित है। प्रत्येक राष्ट्र के लिये शिक्षा प्राथमिकता की वस्तु है यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलता–पूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचता है। व्यक्ति के जीवन में सदा शिक्षा की जरूरत बनी रहती है। हर क्षण उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य उपलब्ध रहता है। व्यक्ति का अस्तित्व बिना शिक्षा के उसी प्रकार है, जैसे– बिना पतवार के नाव।

शोध की आवश्यकता–

विकासात्मक प्रवृत्ति के कारण मानव ने सदा उत्कृष्ट जीवन की कामना की है चाहे वह शिक्षा हो या अन्य कौशल उसने जीवन में उच्च उपलब्धि का चयन किया है। अच्छी षैक्षिक उपलब्धि प्राप्त बच्चे जीवन में सदा आगे रहते है और देष एवं समाज को भी आगे ले जाने के लिए सदा प्रयत्नषील रहते हैं स्वतंत्रता के बाद हमारे देष में विद्यालयों एवं विद्यार्थियों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई परंतु उतनी ही गति से गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ फलतः विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हुई है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि विद्यार्थी जो भी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं उसका उनके व्यवहारिक जीवन में उपयोग नहीं के बराबर हो रहा है। बच्चे विद्यालय तथा संस्थानों में नामांकन तो करा लेते हैं, परन्तु उन्हें कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यालयों में मूलभूत आवष्यकताओं के अभाव के कारण कई विद्यार्थी तो माध्यमिक स्तर तक आते–आते नामांकन रद्द करा लेते इससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होती है (स्रोत– असर सर्वे– 2018) अतः शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में अंतर को जानने की जिज्ञासावश शोधकर्ता ने प्रस्तुत विषय का चयन किया है।

ष

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

षोध की परिकल्पनाऐं

HO1 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{O2} उच्च शासकीय माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{O3} उच्च अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

भोपाल शहर के शासकीय व अशासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा ग्यारहवीं के कुल 100 विद्यार्थियों (शासकीय 50 व अशासकीय 50) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

प्रदत्तों को संकलित करने हेतु प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने स्वनिर्मित षैक्षिक उपलब्धि प्रश्नावली का निर्माण किया है जिसमें विद्यार्थियों के लेखन, वाचन, व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी,सामान्य ज्ञान इत्यादि सभी विषयों के प्रश्नों को प्रश्नावली में शामिल किया गया है। प्रश्नावली के निर्माण में विषय विषेषज्ञों से विचार–विमर्ष कर उनके द्वारा दिए गए निर्देषों का पालन करके इस उपकरण का निर्माण किया गया है। उपकरण की सामग्री वैधता, पद वैधता व निमार्णात्मक वैधता का विष्लेषण विषय विषेषज्ञों के निर्देष पर किया गया स्वनिर्मित षैक्षिक उपलब्धि प्रश्नावली की विष्वसनीयता ज्ञात करने के लिए अर्धविभक्तार्थ विधि ...split half method | एवं पूर्व–परीक्षण व पाष्च–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत प्रपत्र में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं की व्याख्या व विश्लेषण

सारणी क्रमांक 1 उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी –मान	निष्कर्ष
छात्र	50	69.28	7.72	1.68	स्वीकृत
छात्राएं	50	71.16	8.25		

स्वतंत्रता के अंष–98,सार्थकता 0.05 के स्तर पर1.97

उपरोक्त तालिका से स्प∀ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमषः 69.28 तथा 71.16 है प्रमाणिक विचलन 7.72 तथा 8.25 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जाϒच करने पर टी का परिकलित मान 1.68 प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्र अंष 98 का सारणी मान, सार्थकता 0.05 के स्तर पर 1.97 है जबकि प्राप्त टी का मान 1.68 है अतः स्प∀ट है कि टी का मान सारणी के मान से कम है जिससे यह ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं के षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक 2. उच्च शासकीय छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	निष्कर्ष
छात्र	25	69.04	8.41	0.86	स्वीकृत
छात्राएϒ	25	70.92	7.00		

स्वतंत्रता के अंष–48,सार्थकता 0.05 के स्तर पर1.97

उपरोक्त तालिका से स्पश्ट है कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमषः 69.04 तथा 70.92 है प्रमाणिक विचलन 8.41 तथा 7.00 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की जाँच करने पर टी का परिकलित मान 0.86 प्राप्त हुआ है। स्वतंत्रता अंष 48 का सारणी मान, सार्थकता 0.05 के स्तर पर 1.97 है जबकि प्राप्त टी का मान 0.86 है अतः स्पश्ट है कि टी का मान सारणी के मान से अपेक्षाकृत अधिक है जिससे यह ज्ञात होता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक.3 अषासकीय छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अंतर

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान	निष्कर्ष
छात्र	25	67.56	9.63	3.11	अस्वीकृत
छात्राएँ	25	74.76	4.39		

स्वतंत्रता के अंष–48,सार्थकता 0.05 के स्तर पर1.97,

उपरोक्त तालिका से स्पश्ट है कि अषासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान का स्तर क्रमषः 69.56 तथा 74.76 है प्रमाणिक विचलन 9.63 तथा 4.39 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच करने पर टी का परिकलित मान 3.11 प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्रता के अंष 48 का सारणी मान, सार्थकता स्तर .05 के स्तर पर 1.97 है जबकि प्राप्त टी का मान 3.11 है अतः स्पश्ट है कि टी का मान सारणी के मान से अधिक है जिससे यह ज्ञात होता है कि अषासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के षैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि षैक्षिक उपलब्धि में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं के मध्य में अंतर नहीं पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि तुलनात्मक रूप से समान है।
2. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि षैक्षिक उपलब्धि में षासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं के मध्य में अंतर नहीं पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की षैक्षिक तुलनात्मक रूप से समान है।
3. परिणामों द्वारा यह ज्ञात है कि षैक्षिक उपलब्धि में अषासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं के मध्य में अंतर पाया गया है। इसका अर्थ यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की षैक्षिक उपलब्धि तुलनात्मक रूप से समान नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- पांडे, राम सकल (2005): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।
- मादान, पूनम, गर्ग, सुषमा (2015–16) भारत में शिक्षा, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
- शर्मा, आर.ए. (2006), शिक्षा अनुसंधान, मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
- योगेन्द्रजीत प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल (2002) हिन्दी भाषा शिक्षण हिन्दी भाषा और विज्ञान बोध विनोद पुस्तक मंदिर मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी
- गोपाल कृष्णन कार्तिक.(2017) स्टूडेंटस टेकल स्ट्रेस एंड बोर्ड एग्जाम दि टाइम्स ऑफ इंडिया।
- ब्रेमस्,रोड. .(1970) द मैनुअल ऑगड टू द अल्टीमेट स्टडी मेथड. अमेजन डिजिटल सर्विस।